हिन्दखोज: अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी पत्रिका, ISSN: 3048-9873
खंड4, अंक 1, जनवरी – जून, 2026

हिंदी बाल साहित्य का बदलता स्वरूप: डॉ.दिविक रमेश के विशेष संदर्भ में

कुमारी आस्था जैन[1], डॉ. अवधेश कुमार जैन[2]

[1]हिंदी अध्ययनशाला, एवं शोध केंद्र महाराजा छत्रसाल बुंदेलखंड विश्वविद्यालय छतरपुर (मध्य प्रदेश)
[2]प्राध्यापक कमला नेहरू महिला महाविद्यालय दमोह (मध्य प्रदेश)

सारांश:

डॉ. दिविक रमेश जी हिंदी साहित्य प्रमुख सुप्रतिष्ठित वरिष्ठ कवि, बालसाहित्यकार ,अनुवादक एवं चिंतक से आप परिचित होंगे, उन्होंने बाल साहित्य की सभी विधाओं पर अपना लेखन कार्य किया है ।बाल कविताएं बाल नाटक बाल कहानी। दिविक रमेश जी की अनेक कविताओं पर कलाकारों के चित्र,कोलाज ग्राफिक्स आदि बनाए हैं।साहित्य के माध्यम से आपने बाल मनोविज्ञान की जिस तरह व्याख्या की है, वह सराहनीय है। हिंदी बाल साहित्य की विकास यात्रा और उसमें आए वैचारिक व संरचनात्मक परिवर्तनों का विश्लेषण करता है।. शोध का मुख्य केंद्र डॉ. दिविक रमेश का बाल साहित्य है, जो पारंपरिक उपदेशात्मक शैली से हटकर 'बालक के साहित्य' और 'अनुभव आधारित साहित्य' की वकालत करता है.। आधुनिक युग में बाल साहित्य केवल मनोरंजन का साधन नहीं, बल्कि बच्चों के संज्ञानात्मक और मनोवैज्ञानिक विकास का एक अनिवार्य स्तंभ है.आधुनिक बाल साहित्य बच्चों में तर्कशक्ति, वैज्ञानिक चेतना और समस्या समाधान के कौशल विकसित करता है।शोध पत्र समकालीन चुनौतियों, जैसे मोबाइल, इंटरनेट और बाजारवादी मानसिकता के प्रभाव पर भी चर्चा करता है, निष्कर्षतः, यह शोध सिद्ध करता है कि सार्थक बाल साहित्य वह है जो बालक को 'सक्रिय खोजी' बनाता है और उसमें सामाजिक संवेदनशीलता, सहानुभूति तथा नैतिक मूल्यों का बीजारोपण करता है.। आज का बाल साहित्य उपदेश देने के बजाय बालक के साथ 'साझा संवाद' स्थापित कर उसे एक बेहतर मनुष्य बनाने की ओर अग्रसर है।.आज की वर्तमान स्थिति को ध्यान में रखते मुख्य उद्देश्य है, कि बच्चों जन्मदिन पर पुरस्कार के रूप में जगह पत्रिका भेंट करें और बाल साहित्य ‘ मेबरशिप दिलाए’ बच्चों को अच्छी पुस्तक देना, अच्छे मैदान देना ,अच्छे संस्कार, बच्चों को मित्र बनकर बाल साहित्य को लिखना, एवं बालक बालिकाओं को अपने अधिकारों से अवगत करना।

मुख्य शब्द : बाल साहित्य, दिविक रमेश, संज्ञानात्मक विकास, वैज्ञानिक चेतना, बाल मनोविज्ञान, लूलू, आधुनिक प्रवृत्तियाँ।

प्रस्तावना: हिंदी बाल साहित्य ने 19वीं सदी के अंत से लेकर वर्तमान तक एक लंबा सफर तय किया है। बाल साहित्य केवल बच्चों के लिए नहीं होता है बल्कि हर आयु वर्ग के लिए होता है। पश्चिम के कई विद्वान भी इसी मानते हैं। एक समय था जब हमारे दादा-दादी नाना नानी बड़े लोग थे वह कहीं से लोगों से सुनकर पुस्तक ग्रंथ पढ़कर के पढ़कर के सामग्री को बालक के लिए कहानी रूप में सुनाया करते थे,और उसे उपयोगी बनाया करतेकरके बच्चों को सुनाया करते थे । वह सुनने सुनने का जमाना था। लेकिन वर्तमान स्थिति की बात करें तो आज का वर्तमान स्थिति देखने दिखाने कीहै। उदाहरण के लिए मेरी मम्मी हिंदी से भली-भांति परिचित थी लेकिन उनके पास धार्मिक पुस्तक ही उपलब्ध थी जिसे पढ़कर वह मुझे नैतिकता की कहानी सुनाया करती.. वर्तमान युग की बात करें तो आज के माता-पिता शिक्षित हैं। और वैज्ञानिक एवं उत्कृष्ट बाल साहित्य भी उपलब्ध हैं। । आज वर्तमान स्थिति की बात करें तो आज का बाल साहित्य जो कि बहुत बड़ा उपादान है इसे पढ़कर के बच्चों का संज्ञानात्मक विकास होता है और बच्चे की ज्ञान में वृद्धि के लिए एक नींव बनता है आज का जो बाल साहित्य है वह गलत के प्रति इंकित करता हुआ नजर आ रहा है।आज का बच्चा चुप रहने वाला नहीं है. डॉ दिविक रमेश के बाल साहित्य का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है होलू का दिमाग चलता दिविक रमेश के अनुसार, बाल साहित्य को केवल 'बालकों की चीज' मानकर उपेक्षित नहीं किया जाना चाहिए, बल्कि इसे 'साहित्य' के समकक्ष महत्त्व देना अनिवार्य है। यह शोध पत्र में वर्णित 'नया चिंतन' और 'नया प्रतिमान' के सिद्धांतों पर आधारित है।

बाल साहित्य के नए प्रतिमान : पहले 'बालक के लिए, साहित्य' (उपदेशात्मक) लिखा जाता था, जबकि अब 'बालक का साहित्य' अनुभव आधारित लिखा जा रहा है।

साझा साहित्य: बाल साहित्य केवल बच्चों के लिए नहीं, बल्कि हर उस व्यक्ति के लिए है जिसमें 'बाल-मन' जीवित है। माता-पिता और शिक्षकों को भी इससे जुड़ना चाहिए।

कलात्मक अनुभव: बाल साहित्य को कोरी जानकारी या उपदेश के बजाय एक 'कलात्मक अनुभव' होना चाहिए।
विधागत विविधता और वैज्ञानिक चेतना: वैज्ञानिक दृष्टिकोण: विज्ञान कथाओं का उद्देश्य केवल विज्ञान सिखाना नहीं, बल्कि बच्चों में 'वैज्ञानिक स्वभाव' विकसित करना होना चाहिए।

लोक साहित्य: लोक संस्कृति और लोक साहित्य बाल साहित्य के समृद्ध स्रोत हैं।

समकालीन चुनौतियां: मोबाइल और इंटरनेट के दौर में बाल साहित्यकार के सामने बच्चों की बदलती मानसिकता और बाजारवाद एक बड़ी चुनौती है। बच्चों के सामने इंटरनेट फिल्म तथा अन्य वीडियो की सुविधा के चलते एक नई दुनिया और उसके नए भाषा रूप का भी विस्फोट हो रहा है और भी उससे प्रभावित हो रहे हैं ।अतः आज का बाल साहित्यकार बालक के बारे में परंपरा भर से कम चलाते हुए अर्थात उसके विकास की अपेक्षा करते हुए सामान्य है।उनका जितना भी गलत प्रभाव है उसके लिए भी बालक दोषी नहीं है बल्कि अंततः मनुष्य है जो अपने बाजारवादी मानसिकता की तुष्टि के लिए उन्हें गलत को परोसने की भी वस्तु बनाते हैं।

आलोचनात्मक विश्लेषण: **उपदेशात्मकता बनाम रचनात्मकता**:
बाल साहित्य का संज्ञानात्मक पक्ष इस बात पर निर्भर करता है कि वह बालक की तर्कशक्ति, भाषा-बोध और समस्या समाधान की क्षमता को कैसे विकसित करता है। डॉ. दिविक रमेश की कहानियाँ मात्र मनोरंजन का साधन नहीं हैं, बल्कि वे बालक के **'बौद्धिक संज्ञान'** को जागृत करती हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में 'होलू का दिमाग चलता है' संग्रह के माध्यम से बालक के मानसिक कौशलों के विकास का विश्लेषण किया गया है।

कार्य-कारण संबंध का बोध:
संज्ञानात्मक विकास का एक महत्वपूर्ण चरण है 'क्यों' और 'कैसे' को समझना। संग्रह की कहानी 'हवा ने चाँटा मारा' में पात्र अर्श पूछता है— "मुझे चाँटा क्यों मारा हवा?" यह प्रश्न बालक की उस मानसिक प्रक्रिया को दर्शाता है जहाँ वह प्राकृतिक घटनाओं का कारण ढूँढ रहा है। दिविक जी यहाँ बालक को केवल उत्तर नहीं देते, बल्कि उसे सोचने पर मजबूर करते हैं, जो उसके मस्तिष्क के 'लॉजिकल सेंटर' को सक्रिय करता है।

आंतरिक संवाद और अर्थ-निर्माण:
रूसी **मनोवैज्ञानिक वायगोत्स्की** के अनुसार, बच्चा खुद से बात करके सीखता है- "उसने सोचा। सोचा तो मानो 'सोचा' ने ही बताया... अर्श चुप हो गया, दिमाग था कि वह चलता ही रहा।" यह पंक्तियाँ बालक के 'मेटा-कॉग्निशन' यानी 'अपने ही सोचने की प्रक्रिया पर सोचना' को दर्शाती हैं। डॉ. रमेश ने बहुत खूबसूरती से दिखाया है कि बालक चुप रहकर भी मानसिक रूप से सक्रिय रहता है।

सूझबूझ और समस्या समाधान डॉ दिविक रमेश जी की बाल कथा संग्रह पुस्तक का शीर्षक 'होलू का दिमाग चलता है' सीधे तौर पर संज्ञानात्मक कौशल की ओर संकेत करता है। 'होलू' का नटखटपन केवल शरारत नहीं है, बल्कि उसकी **'सूझबूझ'** है। दिविक जी की कहानियाँ बालक को सिखाती हैं कि कठिन परिस्थितियों में अपनी बुद्धि का प्रयोग कर समाधान कैसे निकाला जाए।

संवेगात्मक संज्ञान :
'भाड़ में जाए' कहानी का संदर्भ देते हुए लेखक ने एक बच्चे की 'शारीरिक कमी' पर 'सुखद विजय' की बात की है। संज्ञान का एक महत्वपूर्ण हिस्सा 'स्व-पहचान' है। बालक अपनी कमी को समझकर उसे अपनी भावना से ऊपर रखकर जीतता है, जो उसके उच्च-स्तरीय मानसिक विकास का परिचायक है।

भाषाई संज्ञान और बिम्ब विधान लेखक ने अपनी भूमिका में कहा है कि कहानियों में "मज़ेदार संवाद और नाटकीयता" स्वतः आए हैं। संज्ञानात्मक दृष्टि से, संवादों की बहुलता बालक के 'सामाजिक संज्ञान' को बढ़ाती है। **'सनसन... सनन...'** जैसे ध्वन्यात्मक शब्दों का प्रयोग बालक के मस्तिष्क में स्पष्ट 'बिम्ब' बनाता है, जिससे उसकी स्मृति और भाषा ग्रहण करने की शक्ति तीव्र होती है।

डॉ. दिविक रमेश का बाल साहित्य बालक को 'सूचना' देने के बजाय उसे 'ज्ञान की प्रक्रिया' में शामिल करता है। वे बालक को एक 'सक्रिय खोजी' के रूप में चित्रित करते हैं। **'होलू का दिमाग चलता** है' संग्रह यह सिद्ध करता है कि सार्थक बाल साहित्य वही है जो बालक के मस्तिष्क और हृदय

* उदाहरण: मुझे चांटा क्यों मारा हवा ? अर्श ने मुंह बनाकर पूछा कोई जवाब नहीं आया। उसने सोचा, सोचा तो मानो ' सोचा ' ने ही बताया – हवा को बोलना कहाँ आता है. मनुष्य की तरह ।दिमाग था कि चलता रहा" **आलोचनात्मक विश्लेषण: उपदेशात्मकता बनाम रचनात्मकता:** शोध में यह पाया गया है कि आधुनिक बाल साहित्यकार पुरानी उपदेशात्मक शैली को त्याग कर साथ-साथ सीखने की शैली अपना रहा है जहां पुरानी साहित्य में राजा रानी और परियों की कहानी केवल कल्पना पर आधारित वही आज साहित्य विश्वसनीयता की बुनियाद खड़ा है।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण :
पापा यह बच्चा जो
थाली की झूठन है खाता।
कौन है पापा यह बच्चा जो
कूड़े में कुछ ढूंढा करता।

देखो पापा देखो यह तो
नंगे पाँव ही चलता रहता।
कपड़े भी हैं फटे- पुराने
मैले मैले पहने रहता।

डॉ.दिविक रमेश जी की यह कविता बहुत ही भावुक और मर्मस्पर्शी है। यह एक बच्चे की मासूमियत और उसकी जिज्ञासा के माध्यम से हमारे समाज की एक कड़वी सच्चाई—बाल श्रम और गरीबी—को दर्शाती है।बच्चा जब अपने से विपरीत परिस्थितियों वाले दूसरे बच्चे को देखता है, तो उसके मन में कई सवाल उठते हैं। यहाँ कविता का भावार्थ और इसके पीछे का संदेश दिया गया है।

कविता का भाव और संदेश
समानता की पुकार: कविता में बच्चा यह नहीं समझ पा रहा कि एक ही उम्र के दो बच्चों के जीवन में इतना बड़ा अंतर क्यों है। एक स्कूल जा रहा है, जबकि दूसरा कूड़े में खाना ढूँढ रहा है।

मासूमियत और करुणा: बच्चा दूसरे बच्चे को "डांटने" की बात करता है क्योंकि उसे लगता है कि वह अपनी मर्जी से स्कूल नहीं जा रहा। लेकिन अंत तक आते-आते उसकी मासूमियत करुणा में बदल जाती है और वह चाहता है कि उस गरीब बच्चे को भी अच्छे कपड़े और शिक्षा मिले।सामाजिक जिम्मेदारी: यह कविता बड़ों (पापा) को आईना दिखाती है कि समाज में आज भी ऐसे बच्चे हैं जिन्हें बुनियादी सुविधाएं भी नसीब नहीं हैं। डॉ.दिविक रमेश जी की कहानी संग्रह मेरी **मन की बाल कहानियो के लिए साहित्यिक अकादमी बाल साहित्य पुरस्कार से सम्मानित** किया गया था जिसमें बालक लू लू के माध्यम से जो कि एक जिज्ञासु, संवेदनशील और सीखने वाला बच्चा, जो अपने अनुभवों से नैतिक सबक लेता है। प्राथमिक स्रोत के रूप में संग्रह की सभी 18 कहानियों का गहन अध्ययन किया गया है। जिस में **सामाजिक असमानता और संवेदनशीलता** – 'लाल बत्ती पर' कहानी में गरीब बच्चों के प्रति संवेदनशील दृष्टिकोण और उपेक्षा का चित्रण।

बाल मनोविज्ञान और जिज्ञासा – 'मैं क्यों सोचूं', 'लू लू की बातें' जैसी कहानियों में बच्चों की आंतरिक दुनिया और प्रश्नों को रेखांकित किया गया है।

नैतिक शिक्षा और सामाजिक व्यवहार – 'सॉरी लू लू', 'लू लू की सनक', 'किस्सा चाचा तरकीबूराम का' में सही-गलत की समझ, माफी और सामूहिक जिम्मेदारी का संदेश।

पर्यावरण और प्रकृति से जुड़ाव – 'आँखें मूँदो नानी' में कल्पना के माध्यम से प्रकृति संरक्षण का भाव।

ऐतिहासिक और देशभक्ति की भावना – 'देशभक्त डाकू', 'गुलामी पाप है' जैसी कहानियों में स्वतंत्रता संग्राम और राष्ट्रप्रेम को बाल-मनोयोग्य बनाया गया है।

पारिवारिक संबंध और संवाद – 'लू लू की माँ', 'लू लू बड़ा हो गया' में माता-पिता और बच्चों के बीच संवाद और समझ को दर्शाया गया है। अतः हम कह सकते हैं ।।दिविक रमेश का बाल कहानी संग्रह 'मेरे मन की कुछ बाल कहानियाँ' हिंदी बाल साहित्य की एक समृद्ध और प्रासंगिक रचना है। दिविक रमेश जी की बाल कहानी **लू लू की सनक** जिसमें लुलु के माध्यम से वर्तमान बालक का व्यवहार दिखाया गया हैं।लूलू के चरित्र में शुरुआती तौर पर नकारात्मक प्रवृत्तियाँ देखी गईं अत्यधिक **आलस और निर्भरता**: वह पानी का गिलास लेने या रजाई ओढ़ने जैसे छोटे कार्यों के लिए भी पूरी तरह अपनी माँ पर निर्भर था। भोजन का विकार उसे केवल मसालेदार चिप्स खाने की सनक थी और वह पौष्टिक भोजन को 'उपदेश' मानकर अनसुना कर देता था। सामाजिक असुरक्षा और तुलना वह अपने जन्मदिन के उपहारों की तुलना दूसरों के उपहारों की कीमत से करता था और असंतोष व्यक्त करता था। फिर लूलू के व्यवहार को बदलने के लिए उसकी माँ और शिक्षिका ने 'अप्रत्यक्ष शिक्षण' पद्धति का उपयोग किया:

रिवर्स साइकोलॉजी (काम के प्रति): माँ ने लूलू को यह कहकर चौंका दिया कि अब से उसके हिस्से का 'खेलना' और 'टी.वी. देखना' भी माँ ही करेगी। इससे लूलू को आत्मनिर्भरता का महत्व समझ आया।

अनुभवजन्य शिक्षा (भोजन के प्रति): स्कूल में 'खाली टिफिन' की योजना के माध्यम से उसे भूख की स्थिति में दाल-रोटी और परांठे का स्वाद चखाया गया, जिससे उसकी चिप्स की लत छूटी।

संस्कार और सहानुभूति: 'लाल बत्ती' और 'फटीचर' वाली घटनाओं के माध्यम से उसे सामाजिक समानता और दूसरों के प्रति सहानुभूति रखने की सीख दी गई।

निष्कर्ष: दिविक रमेश की यह कृति हिंदी बाल साहित्य के मूल्यांकन का एक नया मार्ग प्रशस्त करती है। शोध पत्र यह सिद्ध करता है कि बच्चों की 'सनक' या ज़िद वास्तव में उनकी नासमझी का परिणाम होती है। यदि माता-पिता और शिक्षक बाल साहित्य को

पढ़कर के रचनात्मक तरीके अपनाएं, तो बच्चे न केवल अपनी आदतों को सुधारते हैं, बल्कि उनमें सहानुभूति और दूसरों की मदद करने जैसे मानवीय गुण भी विकसित होते हैं। निष्कर्षतः, बाल साहित्य को समाज की विद्रूपताओं, जेंडर संवेदीकरण और हाशिए के बच्चों (ग्रामीण व आदिवासी) के अनुभवों को भी अपनी विषय-वस्तु बनाना चाहिए। यह विधा आज अपने 'स्वर्णिम युग' की ओर अग्रसर है, इसे गंभीरता से मूल्यांकित किया जाए। यह शोध पत्र दिविक रमेश की पुस्तक 'बाल साहित्य: कुछ परख, कुछ निदान' के आलोक में आधुनिक हिंदी बाल साहित्य की प्रवृत्तियों, चुनौतियों और इसमें आए वैचारिक बदलावों का विश्लेषण करता है। शोध का मुख्य केंद्र इस बात पर है। कि बाल साहित्य केवल मनोरंजन का साधन नहीं, बल्कि एक गंभीर साहित्यिक विधा है, जो बच्चों के मानसिक और मनोवैज्ञानिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

संदर्भ ग्रंथ:

[1]. रमेश, दिविक. बाल साहित्य : कुछ परख, कुछ निदान. सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन, नई दिल्ली. पृष्ठ क्रमांक 2।
[2]. रमेश, दिविक. बाल साहित्य : कुछ परख, कुछ निदान. सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन, नई दिल्ली. पृष्ठ क्रमांक 7।
[3]. रमेश, दिविक. बाल साहित्य : कुछ परख, कुछ निदान. सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन, नई दिल्ली. पृष्ठ क्रमांक 8।
[4]. रमेश, दिविक. बाल साहित्य : कुछ परख, कुछ निदान. सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन, नई दिल्ली. पृष्ठ क्रमांक 9।
[5]. रमेश, दिविक. बाल साहित्य : कुछ परख, कुछ निदान. सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन, नई दिल्ली. पृष्ठ 10।
[6]. रमेश, दिविक अनब्राउंड स्क्रिप्ट प्रकाशन, 2023.
[7]. रमेश,. दिविक अनब्राउंड स्क्रिप्ट प्रकाशन, पृष्ठ क्रमांक19
[8]. रमेश, दिविक। (2024)। मेरे मन की कुछ बाल कहानियाँ। नोएडा: स्व-प्रकाशित।
[9]. शुक्ल, रामचंद्र। (2000)। हिंदी साहित्य का इतिहास। काशी: नागरी प्रचारिणी सभा।
[10]. यूजीसी। (2020)। शोध पत्र लेखन दिशानिर्देश। नई दिल्ली: यूजीसी प्रकाशन।
[11]. बच्चन, अमिताभ। (2018)। बाल मनोविज्ञान और साहित्य। मुम्बई: प्रभात प्रकाशन।
[12]. रमेश, दिविक. लू लू का आविष्कार (बाल कहानियाँ). नई दिल्ली: साहित्य अकादेमी, 2021..
[13]. रमेश, दिविक. लूलू की सनक. राष्ट्रीय पुस्तक न्यास (NBT), भारत।